YOUNG RESEARCHER
ISSN: 2277-7911 Impact Factor: 5.077 (SJIF 2021)
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal
Volume - 12, Issue - I, Jan-Feb-March 2023

भारत में मानवीय संसाधन के रूप में शिक्षित महिलाओं की भुमिका

डॉ. बन्दना श्रिवास्तव

(असिस्टेंट प्रोफेसर) Ph.D. (Economics)

रामेश्वर सिंह टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज(पांडेय परसावां गया बिहार) (मगध विश्व विद्यालय बोधा गया)

Corresponding Author: डॉ. बन्दना श्रिवास्तव

DOI - 10.5281/zenodo.8347510

प्रस्तावना:

किसी देश का आर्थिक विकास उत्पादन के साधनों पर निर्भर करता है। दूसरे शब्दों में आर्थिका विकास भूमि जम, पूँजी एवं उघम जैसे मानवीय तथा भौतिक साधनों का परिणाम है। भुमि,खानिज,मशीन,मकान आदि साधनों की तरह जनसख्ंया भी उत्पादन का साधन है। जिस मानवीय साधन Human Resource अथवा मानवीय पूँजी Human Capital कहते हैं।

इस प्रकार अन्य साधनों की तरह जनसंख्या population भी उत्पादन का एक साधन है जिस हम मानवीय साधन कहते हैं। दूसरे शब्दों में मानवीय पूँजी का मतलब मनुष्य में विनियोग अथवा शिक्षा,ट्रेनिंग,स्वास्थ आदि पर किये गये व्यय के माध्यम से लोगों द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान योग्यता कौशल तथा शारिरिक क्षमता है जो उनकी उत्पादन योग्यता में वृद्धि कर उन्हें अधिका उत्पादन करने में मदद करती है।

मानवीय संसाधन के रूप में शिक्षित महिलाओं की भूमिका:

किसी देश के आर्थिक विकास में मानवीय पूँजी अथवा मानवीय साधनों का बहूत बड़ा योगदान होता है। मनुष्य अथवा योग स्वतः उत्पादन के साधन नहीं होते । इसके लिए मानवीय साधनों का विकसित करने अथवा मानवीय पूँजी-निर्माण की आवश्यकता पड़ती है।

वहीं दूसरी ओर हमारे देश एवं समाज में स्त्री शिक्षा पर ध्यान देने का वर्तमान समय में कोशिश एवं प्रयास करने का सराहनीय कदम उठाया जा रहा है।

वर्तमान समय में पूरूषों से कदम-से-कदम मिलाकर हमारे समाज की महिलायं शिक्षित होकर शिक्षा हथियार या तलवार को धारण कर एक मानवीय संसाधन के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहीं हैं इसमें कोई संशय नहीं है।

हम जानते है की शिक्षा किसी मुर्त वस्तु का उत्पादन तो नहीं करती लेकिन यह को कौशल

सिखलाती है। जिसके द्वारा वस्तुओं का उत्पादन किया जा सकता है अतः शिक्षा पर निवेश करने से हमें उसी प्रकार के मुर्त आर्थिक लाभ प्राप्त होते हैं।

अतः महिलाय शब्द की अग्रणी हैं। भारतीय संस्कृति महिलाओं को बढ़व महत्व प्रदान करती हैं। जिसमें दुनिया की आधी आबादी शामिल है।

संयूक्त राष्ट्र के महासचिव की एक रिपोर्ट के अनुसार- महिलायं मानव संसाधन का 50% हिस्सा बनाती है जो कि सबसे बड़ी मानव संसाधन है जो केवल मनुष्य के पास बड़ी क्षमता है

मानव संसाधन में सभी शक्तिशाली पदों पर पुरूषों का कब्जा है जबकि महिलायं केवल छोटे-मोटे कार्य करती है। सरकर की रिपोर्ट में पाया गया कि महिलायं मानव संसाधन में दो-तिहाई कार्यकारी पदों को पुरा करती है।

वहीं दुसरी ओर मानवीय संसाधन आबादी का लगभग 70% प्रबंधक स्तर पर महिलायं है यह 70% विपणन फर्मो और विनिर्माण फर्मो में क्रमशः 40 और 30 के रूप में उपविभाजित हैं।

यह एक माव ऐसा क्षेत्र है जिसमें नेतृत्व की गूणवता जरूरी है और इसमें महिलाओं का वर्चस्व भी है। तो वे निम्न महत्वपूर्ण कारण है जिनकी वजह से महिलायं इस भुमिका के लिये उपयुक्त मानी गयी हैं तथा इस प्रकार के गुण महिलाओं को इस भुमिका के लिये उपयुक्त बनाते हैं। जिनकी वजह से मानवीय संसाधन जगह में महिलाओं का दबदबा है

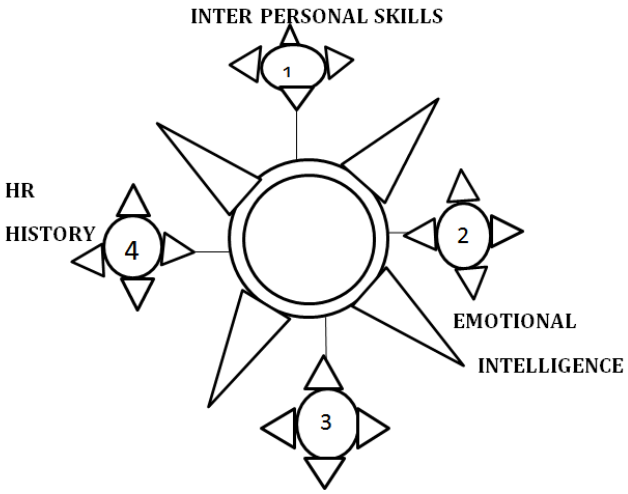

MANGEMENT SKILLS:

1. पारस्परिक कौशल
2. भावनात्मक बुद्धिमता
3. प्रबंधन कौशल
4. मनव संसाधन इतिहास

इस प्रकार पूरूषों की तुलना में महिलाओं का आई (इमोशनल ईंटेलिजेंस) स्कोर बेहतर माना जाता है। सामाजिक होने के साथ-साथ ऐसी गुणवता आतको मानवीय संसाधन क्षेत्र में प्लस पाइंट दिलाती है। अच्छा भावना नियंत्रण और अपनी मानसिक स्थिती के बावजुद बेहतर संवाह करने में सक्षय होना आतको मानवीय संसाधन में समनता का मार्ग प्रस्शत करता है।

साधरणशब्दों में महिलाओं की क्षमता से समाज को काफी नाम होता है मां सभी के जीवन को छूती है और सबकी पहली और सर्वश्रेष्ठ शिक्षक होती है। इस आधुनिक विश्व में कोई भी क्षेत्र

महिलाओं से अछुता नहीं है और हमारे देश में महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है और देश को आगे ले जाने में काफी योगदान दिया है।

वहीं यदि दूसरी ओर साक्षरता की दृष्टि से देखा जाय तो 2001 की जनगणना के अनुसार यद्यपि संपूर्ण भारत में सामान्य साक्षरता-दर 65% से अधिक थी, स्त्रियों की साक्षरता-दर 55% से भी कम तथा पूरूषों की साक्षरता-दर 75% से भी अधिक थी। अतः सामान्य साक्षरता-दर और विशेषकर स्त्रियों की साक्षरता-दर में दृष्टि करने के लिये विशेष प्रयत्न करने की आवश्यकता है।

यह संतोष की बात है की 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की साक्षरता-दर 74 % हो गयी है। 82.14 % पूरूष तथा 65.46 % स्त्रियाँ साक्षर है। पिछले दस वर्षो में पूरूषों की अपेक्षा ज्यादा स्त्रियों 11.30 % साक्षर हुई हैं निम्नांकित तारिका में 2001 तथा 2011 की जनगणना के अनुसार साक्षरता-दर को दिखलाया गया है जो की स्त्रियों के ष्शैक्षिक मानव संसाधन के रूप को व्यक्त करता हैः-

2001		2011	
सम्पूर्ण भारत	65.38 %	सम्पूर्ण भारत	74.04 %
पूरूष	75.85 %	पूरूष	82.14 %
स्त्रियों	54.16 %	स्त्रियों	65.46 %

अतः भारत में शहरी साक्षरता-दर 80 % से भी अधिक है लेकिन ग्रामीण साक्षरता-दर 60 % से भी कम है। शहर में पूरूषों की साक्षरता-दर 86.7 % है जबकि ग्रामीण स्त्रियों की साक्षरता-दर केवल 46.7 % है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता-दर में वृद्धि करने के लिये प्रयत्न करने होगे।

निष्कर्षः

अतः इस प्रकार निष्कर्ष के तौर पर भारत के सन्दर्भ में हम यह कह सकते हैं की यहाँ पर अभी स्त्रियों की साक्षरता के प्रतिशत को और बढ़ाये जाने की नितान्त आवश्यकता है यही वह औषधी था संजीवनी बुटी है जो उनके जीवन सोच और भविष्य को बदल सकती है तथा तभी वह अपने देश में मानव संसाधन के रूप में अपना महत्वपुर्ण एवं सशक्त योगदान दे सकती है।

सन्दर्भः

1. डाँ. आर. के. सिंघन - भारत के आर्थिक विकास में महिला मानव संसाधन की भागीदारी का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
2. तिवारी, आर. पी. (1999) - शिक्षा ‘‘भारतीय नारी ! वर्तमान समस्थाएँ एवं समाधान
3. बघेला डाँ. हेतसिंह - शिक्षा मनोविज्ञान
4. व्यास डाँ. मिनाक्षी - नारी चेतना और सामाजिक विधान